सत्ताइस

जीवन-पश्चात्

The Afterlife

अधिकांश मसीही जानते हैं कि लोगों के मर जाने पर वे या तो नरक जाते हैं या फिर स्वर्ग! तौभी, सभी यह नहीं जानते कि स्वर्ग धर्मियों का अंतिम वासस्थान नहीं है, और न ही *अधोलोक* अधर्मियों का अन्तिम वासस्थान है।

यीशु मसीह के अनुयायियों की मृत्यु होने पर उनकी आत्माएं/प्राण उसी क्षण स्वर्ग में जाते हैं जहां परमेश्वर रहता है (देखें 2 कुरि. 5:6:8; फिलि. 1:21-23; 1 थिस्स. 4:14)। तौभी, भविष्य में किसी समय परमेश्वर एक नये स्वर्ग और पृथ्वी की रचना करेगा और नया यरूशलेम स्वर्ग से पृथ्वी पर नीचे उतरेगा (देखें 2 पत. 3:13; प्रका. 21:1-2)। वहां धर्मी हमेशा के लिये रहेंगे।

अधर्मियों के मरने पर, वे उसी क्षण *अधोलोक* जाते हैं, लेकिन अधोलोक केवल एक वह स्थान है जहां उनकी देह पुनरुस्थित होने तक प्रतीक्षा में रहती हैं। उस दिन के आने पर वे परमेश्वर के न्याय आसन के सम्मुख खड़े होंगे और इसके बाद उन्हें आग और गंधक से जलती झील में डाला जाएगा, जिसे बाइबल में *गेहेना* कहा गया है। इस सब पर हम पवित्रशास्त्र में से विस्तृत रूप से विचार करेंगे।

अधर्मियों की मृत्यु होने पर
When the Unrighteous Die

यह अच्छी तरह से समझने के लिये कि मृत्यु पश्चात् अधर्मियों का क्या होता है, हमें पुराने नियम से एक इब्रानी शब्द और तीन नये नियम के यूनानी शब्दों का अध्ययन करना है। यद्यपि इन इब्रानी और यूनानी शब्दों का तीन भिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है, तौभी बाइबल अनुवादों में इसका अनुवाद *नरक* किया जाता है, जिससे पाठक भ्रम में पड़ सकते हैं।

आइये सबसे पहले पुराने नियम के इब्रानी शब्द *शिओल (अधोलोक)* पर विचार करें।

शिओल (अधोलोक) शब्द का वर्णन पुराने नियम में साठ से भी अधिक बार हुआ है। यह स्पष्ट रूप से मृत्यु पश्चात् अधर्मियों के रहने के बारे में बताता है। उदाहरण के लिये, जब कोरह और उसके अनुयायियों ने जंगल में मूसा के विरुद्ध विद्रोह किया, तब परमेश्वर ने पृथ्वी को खोल देने के द्वारा उन्हें दण्ड दिया, जिसने उन्हें और उनकी संपत्ति को निगल लिया। पवित्रशास्त्र बाताता है कि वे शिओल में जा पड़े:

> और वे और उनका सारा घरबार जीवित ही अधोलोक में जा पड़े, और पृथ्वी ने उनको ढांप लिया और वे मण्डली के बीच से नष्ट हो गए (गिनती 16:33, पर बल दिया गया है)।

तत्पश्चात् इस्राएल के इतिहास में, परमेश्वर ने उन्हें चिताया कि उसके क्रोध की आग भड़कने पर वह शिओल अर्थात् अधोलोक को भी जला देगी।

> क्योंकि मेरे कोप की आग भड़क उठी है, जो *पाताल (शिओल)* की तह तक जलती जाएगी, और पृथ्वी अपनी उपज समेत भस्म हो जाएगी, और पहाड़ों की नेवों में भी आग लगा देगी (व्यवस्था. 32:22, पर बल दिया गया है)।

राजा दाऊद ने घोषित किया:

> दुष्ट अधोलोक (शिओल) में लौट जाएंगे, तथा वे सब जातियां भी जो परमेश्वर को भूल जाती हैं (भजन. 9:17, पर बल दिया गया है।)

और उसने अधर्मियों के लिए यह निवेदन करते हुए प्रार्थना की,

> उनको मृत्यु अचानक आ दबाए, वे जीवित ही अधोलोक (शिओल) में उतर जाएं; क्योंकि उनके घर और मन दोनों में बुराइयां और उत्पात भरा है (भजन. 55:15, पर बल दिया गया है)।

युवा पुरुषों को वेश्या स्त्री के दांवपेचों से चेतावनी देते हुए, बुद्धिमान सुलैमान ने लिखा,

> उसका घर *अधोलोक* का मार्ग है, वह मृत्यु के घर में पहुंचाता है... वह नहीं जानता है कि वहां मरे हुए पड़े हैं, और उस स्त्री के नेवताहारी *अधोलोक* के निचले स्थानों में पहुंचे हैं (नीति. 7:27; 9:18, पर बल दिया गया है।)।

सुलैमान ने अन्य नीतिवचनों को लिखा जो हमें यह विश्वास कराते हैं कि धर्मियों का अन्त निश्चय ही अधोलोक में नहीं होगा:

> बुद्धिमान के लिए जीवन का मार्ग ऊपर की ओर जाता है, इस रीति से वह *अधोलोक* में पड़ने से बच जाता है (नीति. 15:24, पर बल दिया गया है)।
>
> तू उसको छड़ी से मारकर उसका प्राण *अधोलोक* से बचाएगा (नीति. 23:14 पर बल दिया गया है)।

अन्तत: नरक के बारे में यीशु के पूर्वाभास में यशायाह भविष्यवाणी के रूप में बाबुल के राजा से बोला, जिसने स्वयं को ऊंचा तो उठाया था परन्तु जो अधोलोक में जाने वाला था:

> पाताल के नीचे *अधोलोक* में तुझ से मिलने के लिये हलचल हो रही है; वह तेरे लिये मुर्दों को अर्थात् पृथ्वी के सब सरदारों को जगाता है, और वह जाति जाति के सब राजाओं को उनके सिंहासन पर से उठा खड़ा करता है। वे सब तुझसे कहेंगे, ''क्या तू भी हमारी नाईं निर्बल हो गया है? क्या तू हमारे समान ही बन गया, तेरा विभव और तेरी सारंगियों का शब्द *अधोलोक* में उतारा गया है; कीड़े तेरा बिछौना और केंचुए तेरा ओढ़ना हैं।
>
> हे भोर के चमकने वाले तारे तू क्योंकर आकाश से गिर पड़ा है, तू जो जाति जाति को हरा देता था तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? तू मन में कहता तो था कि ''मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूंगा, और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूंगा; मैं मेघों से भी ऊँचे ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।'' परन्तु तू अधोलोक में उस गड्हे की तह तक उतारा जाएगा। जो तुझे देखेंगे तुझ को ताकते हुए तेरे विषय में सोच सोचकर कहेंगे, ''क्या यह वही पुरुष है जो पृथ्वी को चैन से रहने न देता था, और राज्य राज्य में घबराहट डाल देता था; जो जगत को जंगल बनाता और उसके नगरों को ढा देता था, और अपने बंधुओं को घर जाने नहीं देता था'' (यशा? 1-14:9-17, पर बल दिया गया है)।

ये पद और इसी तरह के अन्य पद हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि अधोलोक अर्थात् शिओल सदा से रहा है और अभी भी पीड़ा का वह स्थान है जहां अधर्मी अपनी मृत्यु पश्चात् कैद में रहते हैं। इसके और बहुत से प्रमाण हैं।

अधोलोक
Hades

यह स्पष्ट है कि नये नियम का यूनानी शब्द *अधोलोक* पुराने नियम के इब्रानी शब्द *शिओल* का ही स्थान है। इसके प्रमाण के लिये, हम सभी को भजन संहिता 16:9 के साथ प्रेरितों के काम 2:27 की तुलना करने की ज़रूरत है, जहां इस तरह से उद्धृत है:

> क्योंकि तू मेरे प्राण को *अधोलोक* में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा (भजन. 16:9ब पर बल दिया गया है)।
>
> क्योंकि तू मेरे प्राणों को *अधोलोक* में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा (प्रेरित. 2:27, पर बल दिया गया है)।

इस तरह से यह रोचक है कि सभी दस उद्धरणों में जहां *अधोलोक* का वर्णन नये नियम में किया गया है, इसे हमेशा नकारात्मक भाव में और अक्सर एक ऐसे पीड़ा देनेवाले स्थान के रूप में बोला जाता है जहां दुष्टों को मृत्य पश्चात् कैद में रखा जाता है (देखें मत्ती 11:23; 16:18; लूका 10:15; 16:23; प्रेरित. 2:27; 2:31; प्रका. 1:18; 6:8; 20:13-14)। पुन:, यह सब संकेत देता है कि शिओल/अधोलोक मृत्यु पश्चात् अधर्मियों के रहने का स्थान है, एक पीड़ा का स्थान।[67]

क्या यीशु शिओल/अधोलोक गया था?
Did Jesus Go to Sheol/Hades?

आइये भजन संहिता 16:9 और प्रेरितों के काम 2:27 में पतरस द्वारा वर्णित उसके उद्धरण पर विचार करें, ये दोनों पद संकेत देते हैं कि शिओल और अधोलोक एक ही स्थान हैं। पतरस के पिन्तेकुस्त संदेश के अनुसार, दाऊद भजन. 16:9 में स्वयं के बारे में नहीं बोल रहा था, बल्कि वह भविष्यवाणी के रूप में मसीह के बारे में बोल रहा था क्योंकि दाऊद की देह तो मसीह के विपरीत सड़ी थी (देखें प्रेरित. 2:29-31)। इस तरह से हम जान पाते हैं कि वास्तव में भजन. 16:9 में यीशु अपने विश्वास की घोषणा करते हुए अपने पिता से बोल रहा था, कि उसका पिता उसके प्राण को अधोलोक में नहीं छोड़ेगा और न ही उसकी देह को सड़ने देगा।

---

67. कुछ उत्प. 37:35, अय्यूब 14:13, भजन. 89:48, सभो. 9:10 और यशा. 38:9-10 पदों से यह अर्थ लगाने का प्रयास करते हैं कि शिओल एक ऐसा स्थान है जहां अपनी मृत्यु पश्चात् धर्मी भी जाएंगे। पवित्रशास्त्र इस विचार की पुष्टि नहीं करता। यदि शिओल मृत्यु पश्चात धर्मियों और अधर्मियों के जाने का स्थान है तो वहां अवश्य ही दो विभाग होने चाहिए– एक नरक और दूसरा स्वर्ग, जिसका समर्थन प्राय: इस पर विवाद करनेवालों द्वारा किया जाता है।

कुछ यीशु की इस घोषणा का अर्थ इस प्रमाण के रूप में देते हैं कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच तीन दिन के समय में उसका प्राण शिओल/अधोलोक को गया। तथापि, यह वास्तव में कार्यान्वित नहीं होता। एक बार फिर से ठीक तरह से इस पर ध्यान दें कि यीशु ने अपने पिता से क्या कहा:

> क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा (भजन. 16:9)।

यीशु अपने पिता से यह नहीं कह रहा था, ''मैं जानता हूं कि मेरा प्राण कुछ दिनों के लिए शिओल/अधोलोक में रहेगा, लेकिन मुझे विश्वास है कि तू मुझे वहां नहीं रहने देगा।'' इसके विपरीत, वह कह रहा था, ''मुझे विश्वास है कि मेरी मृत्यु पर मेरे साथ अधर्मियों के समान व्यवहार नहीं किया जाएगा, और न ही मेरे प्राण को शिओल/अधोलोक में छोड़ा जाएगा। मैं वहां एक मिनट का समय भी नहीं बिताऊंगा। मैं तेरी योजना पर विश्वास करता हूं कि तू मुझे तीन दिन में जिलाएगा, और तू मेरी देह को सड़ने भी नहीं देगा।''

यह व्याख्या निश्चय ही सही है। जब यीशु ने कहा, ''न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा'', इसका अर्थ हमें इस तरह नहीं निकालना है कि यीशु की देह पुनरुत्थान से पहले तीन दिन तक सड़ती रही। इसके विपरीत, हमें इसका अर्थ इस तरह से लगाना है कि उसकी देह उसकी मृत्यु से लेकर उसके पुनरुत्थान के समय तक *किसी भी तरह से* नहीं सड़ी।

इसी तरह से, उसके इस कथन की कि उसका प्राण शिओल/अधोलोक में नहीं छोड़ा जाएगा, इस तरह से व्याख्या करने की ज़रूरत नहीं है कि वह कुछ दिनों के लिए शिओल/अधोलोक में रहा था, लेकिन अन्ततः उसे वहां छोड़ा नहीं गया था।[68] इसके विपरीत इसका अर्थ निकालना चाहिए कि उसके प्राण के साथ अधर्मियों के समान व्यवहार नहीं किया गया होगा कि उसे शिओल/अधोलोक में छोड़ा गया हो। उसके प्राण ने एक मिनट का समय भी वहां कभी नहीं बिताया होगा। इस पर भी ध्यान दें कि यीशु ने कहा, ''तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा।''

---

68. इस विशिष्ट व्याख्या का समर्थन करने वाले अवश्य ही अन्य दो थियोरी का भी समर्थन करेंगे। एक थियोरी के अनुसार शिओल/अधोलोक धर्मियों और अधर्मियों की मृत्यु पश्चात् रहने का स्थान था, जिसे दो विभागों में बांटा गया था, एक पीड़ा का स्थान और एक स्वर्ग का स्थान जहां यीशु गया था। दूसरी थियोरी के अनुसार यीशु ने तीन दिन और रात तक शिओल/अधोलोक की आग में दुष्टात्माओं द्वारा पीड़ा को सहा था, क्योंकि हमारे पापों की कीमत चुकाते हुए उसने पूरी तरह से हमारे स्थान पर हमारे दण्ड को सहा था। इन दोनों थियोरी को पवित्रशास्त्र से प्रमाणित करना कठिन है, और ज़रुरी नहीं कि यीशु ने शिओल/अधोलोक में समय बिताया था। उसकी घोषणा का वास्तव में यही अर्थ है। दूसरी थियोरी में, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच यीशु ने तीन दिन और रात तक दुष्टात्माओं द्वारा दी गई पीड़ा को नहीं सहा था। क्योंकि हमारा छुटकारा उसके द्वारा क्रूस पर उठाए गए दुखों द्वारा खरीदा गया है (देखें कुल.1:22), न कि शिओल/अधोलोक के उसके कथित दुखों द्वारा।

तीन दिनों के समय में यीशु की आत्मा कहां थी?

Where Was Jesus' Soul During the Three Days?

स्मरण रखें कि यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था कि वह तीन रात और दिनों तक पृथ्वी के भीतर रहेगा (देखें मत्ती 12:40)। यह इस संदर्भ के रूप में प्रतीत नहीं होता कि उसकी, देह तीन दिन तक एक मकबरे में रही, क्योंकि एक मकबरे को बहुत कठिनाई से ही ''पृथ्वी का भीतरी स्थान'' माना जायगा। इसके विपरीत यीशु अपने प्राणों के पृथ्वी के गहरे स्थानों में होने के बारे में बोल रहा होगा। अत:, हम यह परिणाम निकाल सकते हैं कि उसका प्राण आत्मा उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच स्वर्ग में नहीं था। यीशु ने अपने पुनरुत्थान पर मरियम को यह बताते हुए इसकी पुष्टि की कि वह अब तक अपने पिता के पास नहीं पहुंचा है (देखें यूह. 20:17)।

स्मरण रखें कि यीशु ने क्रूस के पश्चात्तापी चोर से यह कहा था कि वह उसी दिन उसके साथ स्वर्गलोक में होगा (देखें लूका 23:43)। इन सभी सच्चाइयों को एक साथ रखते हुए, हम जान पाते हैं कि यीशु के प्राण आत्मा ने तीन दिन और रात पृथ्वी के गहरे स्थान में बिताए। उस समय के जिस सबसे निचले भाग में वह था, उसे उसने ''स्वर्गलोक'' कहा, जिसे निश्चय ही पीड़ादायक स्थान शिओल/अधोलोक के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

यह सब मुझे यह विचार करने को बाध्य करता है कि पृथ्वी के भीतर शिओल/अधोलोक के अतिरिक्त एक ऐसा स्थान होना चाहिए जिसे ''स्वर्गलोक'' कहा गया है। इस विचार की पुष्टि यीशु द्वारा दो लोगों की मृत्यु की कहानी को सुनाने के द्वारा होती है, जिनमें एक धर्मी और दूसरा विधर्मी था धनी व्यक्ति और लाज़र। आइये कहानी को पढ़ें:

> एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। और लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवड़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर *इब्राहीम की गोद* में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। और *अधोलोक* में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं और दूर से इब्राहीम की गोद में लाज़र को देखा। और उसने पुकार कर कहा, ''हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी अंगुली का सिरा

पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं।'' परन्तु इब्राहीम ने कहा, ''हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएँ ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएँ: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास आना चाहें वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके'' (लूका 16:19-29, पर बल दिया गया है)।

निश्चय ही लाज़र व धनी व्यक्ति दोनों ही मृत्यु पश्चात् अपनी अपनी देह में नहीं थे, लेकिन आत्मा प्राणों के रूप में वे अपने-अपने स्थानों पर पहुंच चुके थे।

लाज़र कहाँ था?

Where Was Lazarus?

ध्यान दें कि धनी व्यक्ति ने स्वयं को *अधोलोक* में पाया, लेकिन उसने लाज़र को इब्राहीम के साथ एक *दूसरे स्थान* पर देखा। वास्तव में, लाज़र को इब्राहीम की गोद में बताया गया है जो एक स्थान का नाम नहीं परन्तु संभवत: उस विश्राम को बताता है जो लाज़र उस स्थान पर पहुंचकर इब्राहीम की ओर से पा रहा था।

धनी व्यक्ति और लाज़र मृत्यु पश्चात् एक दूसरे से कितनी दूरी पर थे?

पवित्रशास्त्र बताता है कि धनी व्यक्ति ने ''दूर से'' लाज़र को देखा और हमें बताया गया है कि उनके बीच में एक ''भारी गड़हे'' को ठहराया'' गया था। अत: उन दोनों के बीच का अन्तर चिन्तन करने का विषय है। तथापि, यह परिणाम निकालना उचित प्रतीत होता है कि उन दोनों के बीच का अन्तर इतना बड़ा नहीं था, जितना कि पृथ्वी के भीतरी स्थान पर स्वर्ग के बीच का अन्तर। अन्यथा, धनी व्यक्ति का लाज़र को देख पाना असंभव प्रतीत होता (ईश्वरीय सहायता के बिना) और वहां दोनों के बीच में ''गहरे गड़हे'' का वर्णन करने की कोई आवश्यकता नहीं होती कि किसी को भी वहां आने जाने से रोका जाए। इसके अतिरिक्त, धनी व्यक्ति इब्राहीम से बोला और बदले में इब्राहीम ने जवाब दिया। इससे हमें ऐसा लगता है कि वे गहरे गड़हे के एक ओर व दूसरी ओर एक दूसरे के पास-पास थे।

इस सब से मैं यह अनुमान लगाता हूं कि लाज़र वहां नहीं था जिसे हम स्वर्ग

---

69. इस पर भी ध्यान दें कि लाज़र और धनी व्यक्ति दोनों ही, बेशक अपनी देहों से अलग हो गए थे, तौभी वे देखने, सुनने और स्पर्श करने योग्य थे। वे दुख और विश्राम को अनुभव कर सकते थे और साथ ही अपने पिछले अनुभवों को भी स्मरण कर सकते थे। यह ''प्राणों के सो जाने'' की थियोरी को अप्रमाणिक ठहराता है जिसके अनुसार लोग मृत्यु पश्चात् एक अविवेकी दशा में जाते हैं, अपनी देहों के पुनरुत्थान के दिन पुन: अपने विवेक के जागृत किये जाने की प्रतीक्षा में।

कहते हैं, बल्कि पृथ्वी के एक पृथक विभाग में।[69] यह अवश्य ही वह स्थान रहा होगा जिसका उल्लेख यीशु ने पश्चात्तापी चोर के लिए *स्वर्गलोक* के रूप में किया था। यह पृथ्वी के भीतर वही स्वर्गलोक था जहां पुराने नियम के धर्मी अपनी मृत्यु पश्चात् गए थे। यह वही स्थान था जहां लाज़र गया और जहां यीशु व पश्चात्तापी चोर गए।

यहीं पर भविष्यद्वक्ता शमूएल भी अपनी मृत्यु पश्चात् गया था। 1शमूएल 28 में हम पढ़ते हैं कि जब परमेश्वर ने मृत शमूएल की आत्मा को प्रगट होने की अनुमति दी कि शाऊल से भविष्यवाणी के रूप में, बोले तो उसे बुलाने वाले ने उसके बारे में इस तरह से कहा, ''मुझे एक देवता *पृथ्वी में से चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है*'' (1शमू. 28:13, पर बल दिया गया है)। शमूएल ने स्वयं शाऊल से कहा, ''तू ने मुझे *ऊपर बुलाकर* क्यों सताया है?'' (1शूम. 28:15, पर बल दिया गया है)। इस तरह से शमूएल की आत्मा/प्राण पृथ्वी के स्वर्गलोक में रहे थे।

पवित्रशास्त्र इसका समर्थन करते हुए कहता है कि मसीह के पुनरुत्थान पर स्वर्गलोक खाली हो गया था, और पुराने नियम के समय में जितने धर्मी लोगों की मृत्यु हुई थी वे यीशु के साथ स्वर्ग ले जाए गए थे। बाइबल कहती है कि जब यीशु पृथ्वी के निचले स्थानों से स्वर्ग पर चढ़ा वह ''बन्धुआई को बान्ध ले गया'' (इफि. 4:8-9, भजन. 68:18)। मेरे विचार से ये बन्धक वे थे जो स्वर्गलोक में रह रहे थे। यीशु ने निश्चय ही लोगों को शिओल/अधोलोक से नहीं छुड़ाया था।[70]

यीशु ने बन्दीगृह में आत्माओं को प्रचार किया
Jesus Preached to Spirits in Prison

पवित्रशास्त्र हमें यह भी बताता है कि यीशु ने लोगों के एक समूह, देहमुक्त आत्माओं, को अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के समय के बीच में एक घोषणा भी की। पतरस 3 में हमें पढ़ते हैं:

> इसलिए कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए: वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। उसी में उसने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए (1पत. 3:18-20)।

70. कुछ लोग ऐसा सोचते हैं, और शायद यह सही भी है, कि इफिसियों 4:8-9 में वर्णित बन्धुवाई हमारे पापों में बन्धे होने को बताती है, जिसे मसीह के पुनरुत्थान द्वारा स्वतंत्र कर दिया गया है।

पवित्रशास्त्र का यह परिच्छेद निश्चय ही कुछ ऐसे प्रश्न उठाता है जिनके जवाब मेरे पास नहीं हैं। यीशु को विशिष्ट रूप से कुछ अनाज्ञाकारी लोगों के लिए इस तरह की घोषणा क्यों करनी पड़ी जो कि नूह की बाढ़ के समय में मर गए थे? उसने उनसे क्या कहा?

किसी भी मामले में, पवित्रशास्त्र का यह पद इस सच्चाई का समर्थन करता प्रतीत होता है कि यीशु ने अपने मृत्यु से लेकर पुनरुत्थान तक के समस्त तीन दिन स्वर्गलोक में नहीं बिताए थे।

गेहेना
Gehenna

आज धर्मी लोगों की देह की मृत्यु होने पर, उनकी आत्माएं प्राण उसी क्षण स्वर्ग जाते हैं (देखें 2 कुरि. 5:6-8; फिलि. 1:21-23; 1 थिस्स. 4:14)।

अधर्मी अभी भी शिओल/अधोलोक में जाते हैं जहां वे पीड़ा उठाते और अपनी देहों के पुनरुत्थान, अपने अन्तिम न्याय और अपने ''आग की झील'' में डाले जाने की प्रतीक्षा करते हैं, एक ऐसा स्थान जो शिओल/अधोलोक से भिन्न स्थान है।

इस आग की झील का वर्णन एक तीसरे शब्द से किया गया है जिसका कई बार अनुवाद *नरक* किया जाता है जो कि यूनानी शब्द *गेहेना* से है। यह शब्द हिन्नोम की खाई में यरूशलेम के बाहर कूड़ा डालने वाले स्थान के नाम से लिया गया था, एक ऐसा सड़ी वस्तुओं का ढेर जिसमें बहुत से कीड़े होते थे, और धूएँ व जलने का एक भाग।

जब यीशु गेहेना के बारे में बोला, तो वह इसके बारे में एक ऐसे स्थान के रूप में बोला जहां लोगों को *देह सहित* डाला जाएगा। उदाहरण के लिये, उसने मत्ती के सुसमाचार में कहा:

> और यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा *शरीर* नरक (गेहेना) में न डाला जाए... जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और *शरीर* दोनों को नरक में नाश कर सकता है। (मत्ती 5:30, 10:28, पर बल दिया गया है।

गेहेना और अधोलोक एक ही स्थान पर नहीं हो सकते क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है कि अधर्मियों को देहमुक्त आत्माओं/प्राणों के साथ अधोलोक भेजा जाता है। मसीह के हज़ार वर्ष के राज्य के पश्चात् जब अधर्मियों की देह पुनरुत्थित होकर परमेश्वर

के सम्मुख न्याय का सामना करेंगी कि वे *आग की झील* या गेहेना में डाले जाएंगे (देखें प्रका. 20:5, 11-15)। इसके अतिरिक्त, अधोलोक स्वयं आग की झील में डाला जाएगा (देखें प्रका. 20:14)। अत: यह आग की झील से एक भिन्न स्थान होना चाहिए।

तारतारोस
Tartaros

पवित्रशास्त्र में जिस चौथे शब्द का अनुवाद *नरक* के लिए किया जाता है, यूनानी शब्द *तारतारोस* है। यह नये नियम में केवल एक बार ही पाया जाता है:

> क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्ड में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें (2पत. 2:4)।

तारतारोस को सामान्यता पाप करने वाले स्वर्गदूतों की एक विशिष्ट कैद के रूप में जाना जाता है, इसलिए ये न तो शिओल/गेहेना या अधोलोक है। यहूदा ने उन स्वर्गदूतों के बारे में लिखा जिन्हें बन्द करके रखा गया है:

> फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में जो सदाकाल के लिये है बन्धनों में रखा है (यहूदा 1:6)।

नरक का भय
The Horrors of Hell

एक अपश्चात्तापी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसे पश्चात्ताप करने का कोई अवसर नहीं दिया जाता है। उसके भाग्य पर मुहर लगा दी जाती है। बाइबल कहती है, ''और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'' (इब्रा. 9:27)।

नरक अनन्तकालीन है, और जो लोग इसके लिए निर्धारित किये गए हैं उनके बचने की कोई आशा नहीं है। अधर्मियों के भावी दण्ड के बारे में बोलते हुए, यीशु ने कहा, ''और ये *अनन्त* दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे'' (मत्ती 25:46, पर बल दिया गया है)। नरक में अधर्मियों का दण्ड धर्मियों के अनन्त जीवन के समान ही अनन्त होगा।

इसी तरह से पौलुस ने लिखा:

> क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते

> हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे... उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर *अनन्त* विनाश का दण्ड पाएंगे (2थिस्स. 1:6-9, पर बल दिया गया है।)।

नरक अकथनीय पीड़ा का स्थान है क्योंकि यहां *कभी समाप्त न होनेवाला* दण्ड होगा। अधर्मी हमेशा के लिए अपने अनन्त दोष और एक न बुझने वाली आग में परमेश्वर के क्रोध को सहेंगे।

यीशु ने नरक को ''बाह्य अन्धियारे'' का स्थान कहा, जहां ''रोना और दांत पीसना'' होगा और एक ऐसा स्थान जहां ''उनका कीड़ा नहीं मारता और आग नहीं बुझती'' (मत्ती 22:13; मर 9:44)। अत:, हमें उस स्थान के बारे में लोगों को चेतावनी देने तथा मसीह द्वारा उनके लिए उपलब्ध उद्धार को बताने की कितनी अधिक ज़रूरत है।

एक विशिष्ट डिनोमिनेशन शोधन अवधारणा के विषय सिखाती है, एक ऐसा स्थान जहां विश्वासी अपने पापों से शुद्ध होने के समय में दुख उठाएंगे और इस तरह से स्वर्ग के योग्य बनेंगे। तथापि, इस तरह के विचार को बाइबल में कहीं भी सिखाया नहीं गया है।

मृत्यु पश्चात् धर्मी
The Righteous After Death

एक विश्वासी की मृत्यु होने पर, उसकी आत्मा उसी समय प्रभु के साथ रहने को स्वर्ग चली जाती है। पौलुस ने अपनी मृत्यु के बारे में लिखते समय इस सच्चाई को अधिक स्पष्ट किया:

> क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और *मर जाना लाभ है।* पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिए लाभदायक है तो मैं नहीं जानता कि किस को चुनूं। क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि *कूच करके मसीह के पास जा रहूं,* क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है (फिलि. 1:21-23, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि पौलुस ने कहा कि उसकी कूच करने की इच्छा थी और यदि उसने कूच किया, तो वह मसीह के साथ होगा। उसकी आत्मा पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करते हुए अचेतन अवस्था में नहीं जाएगी (जैसा कुछ दुर्भाग्यवश सोचते हैं)।

पौलुस ने जो कहा उस पर भी ध्यान दें कि उसके लिए मरना *लाभ* होगा। यह केवल उसकी मृत्यु पर उसके स्वर्ग जाने पर ही सच होगा।

पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखे अपने दूसरे पत्र में यह भी घोषित किया कि एक विश्वासी से आत्मा के अलग हो जाने पर, वह तब ''प्रभु के साथ रहता है'':

> सो हम सदा ढॉढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं, कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं (2 कुरि. 5:6-8)।

अतिरिक्त समर्थन के लिये, पौलुस ने यह भी लिखा:

> हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं अज्ञान रहो; ऐसा न हो, कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा (1 थिस्स. 4:13-14)।

यदि यीशु अपनी वापसी पर स्वर्ग में उन लोगों को वापस लाने जा रहा है ''जो सो गए हैं'' तो अब इस समय वे उसके साथ स्वर्ग में होने चाहिए।

स्वर्ग का पूर्वज्ञान

Heaven Foreseen

स्वर्ग किसके समान है? अपने सीमित मनों में हम कभी भी समस्त महिमा को पूरी तरह से नहीं रख सकते हैं जो वहां हमारी प्रतीक्षा में है, और बाइबल हमें इसकी केवल एक झलक ही देती है। विश्वासियों के लिए स्वर्ग के बारे में सबसे उत्साही सच्चाई यह है कि हम अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु, और हमारे पिता परमेश्वर को आमने सामने देखेंगे। हम ''पिता के घर'' में रहेंगे:

> मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो (यूह. 14:2-3)।

स्वर्ग जाने पर, हम बहुत से रहस्यों को समझ पाएंगे जिन्हें इस समय में हम नहीं समझते हैं। पौलुस ने लिखा:

> अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है, परन्तु उस समय आमने

> सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है; परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानूंगा, जैसा मैं पहचाना गया हूं (1कुरि. 13:12)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें इस बारे में एक सर्वश्रेष्ठ चित्र देती है कि स्वर्ग किसके समान है। बड़ी गतिविधि, अद्‌भुत सुन्दरता, असीमित भिन्नताएं और व्यक्त न किये जा सकने वाला आनन्द के स्थान के रूप में वर्णित स्थान-स्वर्ग, एक ऐसा स्थान नहीं होगा जहां लोग बादलों पर बैठकर पूरा समय वीणा बजाते रहते हैं।

यूहन्ना, जिसे एक बार स्वर्ग का दर्शन दिया गया था, उसने सर्वप्रथम परमेश्वर के सिंहासन पर ध्यान दिया जो कि ब्रह्माण्ड के केन्द्र में था।

> और तुरन्त मैं आत्मा में आ गया; और क्या देखता हूं कि एक सिंहासन स्वर्ग में धरा है, और उस सिंहासन पर कोई बैठा है। और जो उस पर बैठा है, वह यशब और मानिक सा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन के चारों ओर मरकत सा एक मेघधनुष दिखाई देता है। और इस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन हैं; और इन सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन श्वेत वस्त्र पहने हुए बैठे हैं, और उन के सिरों पर सोने के मुकुट हैं। और उस सिंहासन में से बिजलियां और गर्जन निकलते हैं और सिंहासन के सामने आग के सात दीपक जल रहे हैं, ये परमेश्वर की सात आत्माएं हैं और उस सिंहासन के सामने मानो बिल्लोर के सामन कांच का सा समुद्र है, और सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी हैं; जिनके आगे पीछे आंखें ही आंखें हैं। पहला प्राणी सिंह के समान है, और दूसरा प्राणी बछड़े के समान है, तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य का सा है, और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है और चारों प्राणियों के छह छह पंख हैं, और चारों ओर, भीतर आंखें ही आंखें हैं; और वे रात दिन बिना विश्राम किये, यह कहते रहते हैं, कि "पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है।" और जब वे प्राणी उसकी जो सिंहासन पर बैठा है, और जो युगानुयुग जीवता है, महिमा और आदर और धन्यवाद करेंगे। तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के सामने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और अपने अपने मुकुट सिंहासन के सामने यह कहते हुए डाल देंगे कि "हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा और आदर, और सामर्थ के योग्य है। क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं" (प्रका. 4:2-11)।

यूहन्ना ने बुनियादी शब्दों में उसे बताने का अच्छा प्रयास किया जिसकी तुलना पृथ्वी पर किसी भी चीज़ से कठिनाई से ही की जा सकती है। निस्संदेह जब तक हम स्वयं इसे न देख लें हमारे लिए उसके द्वारा देखी गई प्रत्येक चीज़ को समझना कठिन है। लेकिन यह निश्चय ही उत्साहजनक है।

स्वर्ग के बारे में सबसे अधिक उत्साही परिच्छेद प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में मिलते हैं, जहां यूहन्ना ने नये यरूशेलम का वर्णन किया है, जो इस समय स्वर्ग में है, परन्तु यह मसीह के हज़ार वर्ष के राज्य के पश्चात् आएगा:

> और वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया। परमेश्वर की महिमा उसमें थी, और उसकी ज्योति बहुत ही बहुमोल पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की नाईं स्वच्छ थी। और उसकी शहरपनाह बड़ी ऊंची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे.. और जो मेरे साथ बातें कर रहा था, उसके पास नगर, और उसके फाटकों और उसकी शहरपनाह को नापने के लिए एक सोने का गज था। और वह नगर चौकोर बसा हुआ था और इसकी लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी, और उसने उस गज से नगर को नापा, तो साढ़े सात सौ कोस का निकला। उसकी लम्बाई, और चौड़ाई और ऊँचाई बराबर थी... और उसकी शहरपनाह की जुड़ाई यशब की थी, और नगर ऐसे चोखे सोने का था, जो स्वच्छ कांच के समान हो... और बारहों फाटक, बारह मोतियों के थे; एक-एक फाटक, एक-एक मोती का बना था; और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की थी। और मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेमना उसका मन्दिर हैं। और उस नगर में सूर्य और चांद के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है.... फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। और नदी के इस पार; और उस पार जीवन का पेड़ था: उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। और फिर श्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। और उसका मुंह देखेंगे,

> और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा और वे युगानुयुग राज्य करेंगे (प्रका. 21:10-22:5)।

यीशु का प्रत्येक अनुयायी अपने विश्वास में बने रहकर इन सभी आश्चर्यों से आगे देख सकता है। निस्संदेह, हम स्वर्ग में अपने पहले कुछ दिन एक दूसरे से यह कहते हुए बिताएंगे, ''ओ, तो यूहन्ना प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इस सब का वर्णन करने का प्रयास कर रहा था।''